❁ 21 सितम्बर 2014 (19-12-78) की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ **ज्ञान-**

1] पहले अपने स्वरूप की रीयल्टी। अगर रीयल्टी अर्थात् अपने असली स्वरूप की सदा स्मृति है तो स्वरूप की रीयल्टी से इस स्थूल सूरत में भी अलौकिक रॉयल्टी नज़र आयेगी। जो भी देखेंगे उनके मुख से यही निकलेगा कि यह इस दुनिया के नहीं हैं लेकिन अलौकिक दुनिया के फरिश्ते हैं अथवा यह स्वर्ग का कोई देवता उतरा है। ऐसे रॉयल्टी का अनुभव होगा।

2] दूसरी बात स्मृति में भी रीलल्टी अर्थात् एक बाप दूसरा न कोई। इस रीयल्टी की स्मृति से कर्म में वा बोल में रॉयल्टी दिखाई देगी। हर कर्म सत्य अर्थात् श्रेष्ठ होने के कारण जो भी सम्पर्क में आयेंगे उन्हें हर कर्म में बाप समान चरित्र अनुभव होंगे। हर बोल में बाप के समान अथॉरिटी और प्राप्ति की अनुभूति होगी अर्थात् हर बोल समर्थ अर्थात् फल देने वाला होगा। जिसको कहा जाता है सत-वचन। ऐसे कर्म और बोल में रीयल्टी की रॉयल्टी होगी। उनका सम्पर्क अर्थात् संग रीयल होने के कारण पारस का कार्य करेगा। जैसे पारस लोहे को परिवर्तन कर देता है– ऐसे रीयल्टी की रॉयल्टी वाली आत्मा का संग असमर्थ को समर्थ बना देगा अर्थात् नकली को असली बना देगा। ऐसी आत्मा के रीयल और रॉयल नयन अर्थात् दिव्य दृष्टि जादू की वस्तु समान काम करेंगे। अभी-अभी जीवनमुक्ति के स्टेज की अनुभूति, अभी-अभी लास्ट अन्तिम जन्म, अभी-अभी फर्स्ट जन्म का स्पष्ट साक्षात्कार करायेंगे। अभी-अभी अति दु:खी स्टेज, अभी-अभी अति सुखमय जीवन का अनुभव करायेंगे। 'हम सो-सो हम' के जादू के मन्त्र का अनुभव करायेंगे अर्थात् 84 जन्मों का ही ज्ञान स्मृति में दिलायेंगे। अभी-अभी स्थूलवतन, संगमयुग के सुख की अनुभूति करायेंगे, अभी-अभी सूक्ष्म फरिश्ते स्वरूप का अनुभव करायेंगे। अभी-अभी परमधाम निवासी आत्मिक स्वरूप का अनुभव करायेंगे, अभी-अभी स्वर्ग के सुखमय जीवन का अनुभव करायेंगे। एक सेकेण्ड में इन चारों ही धामों का अनुभव करायेंगे, यह है जादू मन्त्र।

3] ऐसे रॉयल्टी वाले सदा सर्व कर्मेन्द्रियों द्वारा कोई न कोई प्राप्ति कराने वाले अर्थात् देने वाले दाता होंगे। ऐसे रॉयल्टी वाले किसी भी प्रकार के मायावी आकर्षण तरफ संकल्प द्वारा भी झुकेंगे नहीं अर्थात् प्रभावित नहीं होंगे। जैसे आजकल की रॉयल्टी वाली आत्मायें सदा भरपूर रहने के कारण यहाँ वहाँ किसी के अधीन नहीं होगी। ऐसे सदा बुद्धि भरपूर रहने के कारण, स्थूल में कहते हैं पेट भरा हुआ है और यहाँ बुद्धि हर खज़ाने से भरपूर होगी, इसीलिए कोई भी व्यक्ति वा वैभव के तरफ जो अल्पज्ञ और अल्पकाल के हैं, वहाँ बुद्धि नहीं जायेगी अर्थात् अप्राप्त कोई वस्तु नहीं होगी– जो लेने के लिए कहाँ नज़र जाए। उनके नयनों में सदा बिन्दु रूप बाप ही समाया हुआ होगा। यह है रॉयल्टी अर्थात् रीयल्टी।

4] सेकेण्ड नम्बर वालों को भी संगमयुग में सर्व प्राप्ति की अनुभूति नहीं होगी। कोई प्राप्ति होगी कोई नहीं होगी। जैसे कई कहते हैं शान्ति की अनुभूति तो होती है लेकिन अतीन्द्रिय सुखा ना अनुभव नहीं है। खुशी की अनुभूति होती है लेकिन शक्ति रूप की अनुभूति नहीं होती। फर्स्ट डिवीजन वाले को हर गुण की अनुभूति हर शक्ति की अनुभूति होगी। अगर कोई की कमी है अर्थात् 14 कला है सेकण्ड डिवीजन। ऐसी आत्मायें अभी तो श्रेष्ठ प्राप्ति से वंचित रह जाती और भविष्य में भी सतोप्रधान प्राप्ति के बजाए सतो प्राप्ति करती है। तो सेकेण्ड डिवीजन हो गये ना। फर्स्ट डिवीजन वाले राज्य के, प्रकृति की सतोप्रधानता का सुख लेंगे और वह सतो का सुख लेंगे, सतोप्रधान का नहीं। तो अब सोचो कि क्या लेना है? सतोप्रधानता की प्राप्ति वा सतो की प्राप्ति।

...2

[2]

5] जो ऐसे तख्तनशीन बच्चे हैं वह पुरानी देह वह देह की दुनिया से विस्मृत रहते हैं, देखते हुए भी नहीं देखते।

6] कोई भी बंधन पिंजड़ा है। पिंजड़े की मैना अब निर्बन्धन उड़ता पंछी बन गयी। अगर कोई तन का बंधन भी है तो भी मन उड़ता पंछी है क्योंकि मनमनाभव होने से मन के बन्धन छूट जाते हैं। प्रवृत्ति को सम्भालने का भी बन्धन नहीं। ट्रस्टी होकर सम्भालने वाले सदा निर्बन्धन रहते हैं। गृहस्थी माना बोझ, बोझ वाला कभी उड़ नहीं सकता। लेकिन ट्रस्टी हैं तो निर्बन्धन हैं और उड़ती कला से सेकण्ड में स्वीट होम पहुंच सकते हैं।

✺ योग-

1] – – –

✺ धारणा-

1] यह देह भी रीयल नहीं, देही रीयल है। तो अपने आप से पूछो रीयल्टी कहाँ तक आई है। नम्बरवार होगी ना मेरा नम्बर कौन सा है- यह चेक करो। फर्स्ट डिवीज़न में है वा सेकेण्ड में हैं, थर्ड तो नहीं कहेंगे ना।

2] सर्व की प्राप्ति का अनुभूति वा कोई-कोई प्राप्ति की अनुभूति, खुद ही अपना जज़ बनो– तो धर्मराज के पास जाना नहीं पड़ेगा।

3] अन्तर्मुखी बनो– अन्तर्मुखी सदा सुखी।.....बाप का सुख का सागर है तो बच्चे भी सुख के सागर में लवलीन रहते होंगे। सुखदाता के बच्चे स्वयं भी सुखदाता। सर्व आत्माओं को सुख का खजाना बांटने वाले। जो भी आवे, जिस भावना से आये, वह भावना आपसे सम्पन्न करके जाए, सर्व सम्पन्न मूर्तियाँ बनो। जैसे बाप के खजाने में अप्राप्त कोई वस्तु नहीं, वैसे बच्चे भी बाप समान तृप्त आत्मा होंगे।

4] उदासी को अपनी दासी बना दो, उसे चेहरे पर आने न दो।

✺ सेवा-

1] अभी क्या करना है? पंजाब की धरनी से नाम से काम करने वाली, सार वाली आत्मायें निकालो। जिसका नाम सुनते अनके आत्मायें अपना भाग्य बना सके। ऐसी विशेष सेवा अभी और भी करनी है। सिर्फ सेवा निमित्त ऐसी विशेष आत्माओं का भी पार्ट है। तो ऐसी आत्माओं को अब सम्पर्क सम्बन्ध में लाओ। समझा क्या करना है ! बड़े आवाज से ललकार करो– छोटे आवाज़ से करते हो तो छोटा आवाज वहाँ के गुरूद्वारों के आवाज में छिप जाता है।